Celebration of Folk Traditions
E.01. July 15-17, 2020
Karpuri Chapter

Brief; Concept Note I English I हिन्दी

"Celebration of Folk Traditions" is an attempt at introducing ourselves to folk art traditions in modern contexts with contemporary approach. Folk Arts are contemporary in themselves. For the same reasons they very simply assimilate all elements of their philosophy, in the subjects, characters, mediums of presentation, and their symbolism. This festival is merely an attempt to understand the forms in which such philosophy expresses itself and the ways in which it transcends its present limits in pursuit of redefining art on alternative platforms.

How the basic needs of rural life, their supply chain for appropriation, their art and visual communication medium emanating from life, categorise from general to exclusive with the application of specification of subjects, and new ideas and conceptualisations, is the endeavour for this festival to witness. Though, the question remains, how easy is the reach of the common folk to such conceptualisations of expressions, the techniques to such creative processes and various such alternative platforms.

Let's introspect on such issues, in the backdrop of the creative journey of Renowned Mithila painter Respected Late Karpuri Devi Ji from Bihar, whose soul was in the Sujani Art form. Her first death anniversary falls on 29th of this month. This festival is dedicated to her.

-

SUNIL KUMAR
Founder Director
ANN India I Folkartopedia

-

July 05, 2020

Celebration of Folk Traditions
E.01. July 15-17, 2020
Karpuri Chapter

Brief; Concept Note I English I हिन्दी

लोक कला-परंपराओं को उनके आधुनिक संदर्भों और समकालीन दृष्टि के साथ उनसे साक्षात्कार करने की कोशिश है 'सेलिब्रेशन ऑफ फोक ट्रेडिशन्स'। लोक कलाएं अपने आप में समकालिक होती हैं। इसी वजह से वह विषयों में, चरित्रों में, प्रस्तुतिकरण के माध्यमों में और उनके प्रतीकार्थों में उन सभी तत्वों को सहजता से समेटते चलती हैं जो उनका जीवन-दर्शन है। वह जीवन दर्शन किन रूपाकारों के जरिए अभिव्यक्त होता है और किस प्रकार अपने वर्तमान की सीमा रेखाओं को लांघते हुए वैकल्पिक मंचों पर कला की नई परिभाषाएं गढ़ने लगता है, यह उत्सव उसी को जाने-समझने की कोशिश भर है।

ग्राम्य जनजीवन की मूलभूत आवश्यकताएं, उनकी आपूर्ति की रचना प्रक्रियाएं, उनकी कलाएं और उनसे जीवन से जुड़ी दृश्य-भाषाएं, विषयों की छौंक व नवीन विचारों-संकल्पनाओं के प्रयोग के माध्यम से किस प्रकार सामान्य से विशिष्ट हो जाती हैं, कोशिश है, यह उत्सव उसका साक्षी बने।

किन्तु, एक प्रश्न है, अभिव्यक्तियों की उन संकल्पनाओं, उनकी रचना प्रक्रिया की तकनीकों और उन वैकल्पिक मंचों तक हमारी पहुंच, सामान्य की पहुंच कितनी संभव है और उस पहुंच का रास्ता कितना सुगम है?

इन प्रश्नों पर हम आत्ममंथन करें, बिहार की ख्यातिलब्ध मिथिला चित्रकार श्रद्धेय कर्पूरी देवी की कला यात्रा की पृष्ठभूमि पर जिनकी आत्मा सुजनी कला में बसती थी। इसी महीने 29 जुलाई को उनकी पहली पुण्यतिथि है। यह उत्सव उन्हीं को समर्पित।

-

सुनील कुमार
संस्थापक निदेशक
एएनएन इंडिया । फोकार्टोपीडिया

-

जुलाई 05, 2020